खण्ड-342, अंक-1
मंगलवार, 6 भाद्रपद, शक संवत् 1901
(28 अगस्त, 1979 ई0)

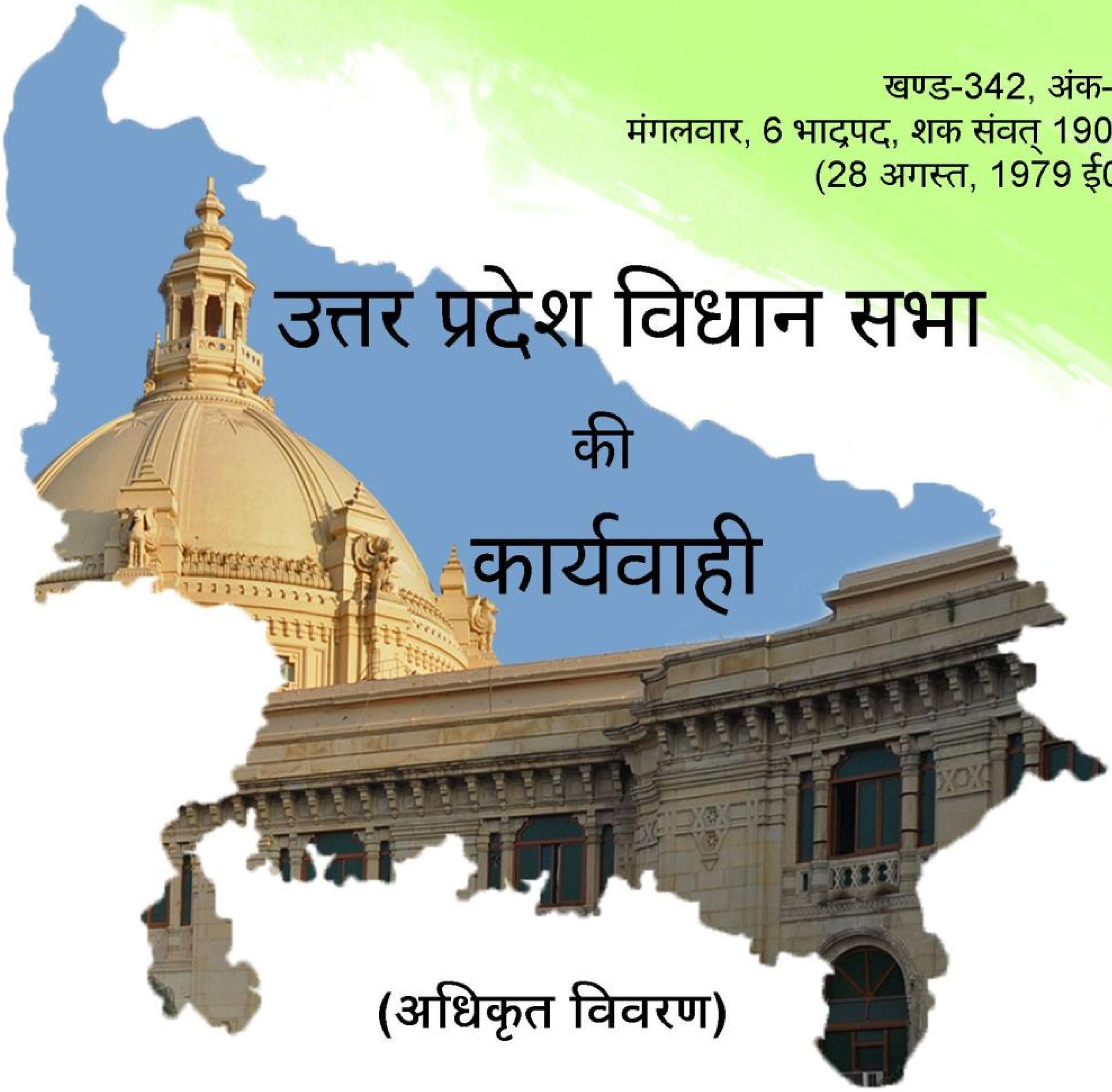

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 342 में 6 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1979

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	1–5
भारत के प्रथम गवर्नर जनरल, लार्ड माउन्टबेटन के निधन पर शोकोद्गार ..	6–10

विधान सभा सचिवालय

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 28 अगस्त, 1979

विधान सभा की बैठक सभा मन्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में उपाध्यक्ष श्री जगन्नाथ प्रसाद की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—401

अकबर हुसैन, श्री
अजब सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
अजब सिंह, श्री (जिला सहारनपुर)
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार अहमद, चौधरी
अनवार अहमद समदनी, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अब्दुल हफीज, श्री
अरुण कुमार, श्री
अली असगर हुसैन, श्री
अवधेश कुमार श्रीवास्तव, श्री
अवधेश नरायन, श्री
अवधेश प्रसाद, श्री
अवनीश कुमार सिंह, श्री
अवैद्य नाथ, श्री
अशफाक अहमद, श्री
अशफाक अहमद खान, श्री
अशर्फी लाल यादव, श्री
अश्वनी कुमार चतुर्वेदी 'राकेश', डाक्टर
आबिद अली, श्री
आरिफ मोहम्मद खाँ, श्री
इन्द्रमणी बड़ौनी, श्री
इसमाईल, श्री
ईशदत्त यादव, श्री
ईश्वर प्रसाद, श्री
उदय नारायण सिंह, श्री
उदय प्रताप सिंह, श्री
उदित नरायन, श्री
उमा कान्त बाजपेई, श्री (उर्फ भैया जी)
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओंकार नाथ, श्री
ओंकार सिंह, श्री
ओम प्रकाश, श्री (उर्फ राम मिलन सिंह)
ओम प्रकाश सिंह, श्री
औसान सिंह, श्री
कन्हई सिंह, श्री
कन्हैयालाल गुप्त, श्री
कन्हैयालाल सोनकर, श्री
कमल किशन पाण्डेय, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कमला प्रसाद सिंह, श्री
करन सिंह, श्री
कल्पनाथ सिंह, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काजी मोहम्मद मोहिउद्दीन, श्री
काली चरण, श्री
कासिम हसन, श्री
किशन लाल, श्री
किशन लाल दिलेर, श्री
कुदसिया बेगम, श्रीमती (बेगम ऐजाज रसूल)
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण कान्त मिश्रा, श्री
कृष्ण कुमार पालीवाल, श्री
कृष्ण वीर सिंह कौशल, डाक्टर
कृष्ण स्वरूप, श्री
कृष्णा राय, श्री
केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री
कैलाश नाथ सिंह, श्री
कौशल किशोर, श्री
खान गुफरान जाहिदी, श्री
खान मोहम्मद आतिफ खां, श्री
ख्यालीराम शास्त्री, श्री
गंगा प्रसाद, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गणेश दत्त बाजपेई, श्री
गनेशी लाल चौधरी, श्री

गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री (उर्फ मन्ने बाबू)
गिरधारी लाल, श्री
गिरीश चन्द्र तिवारी, श्री
गुन्जेश्वर, श्री
गुरुदत्त सोलंकी, श्री
गुरु प्रसाद, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोकरन प्रसाद, श्री
गोविन्द सिंह नेगी, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री
गौरी शंकर भैया, श्री
चन्द्र पाल, श्री
चन्द्रपाल सिंह, श्री
चन्द्रभान मौर्य, श्री
चन्द भूषण सिंह, श्री
चन्द्रशेखर सिंह, श्री
चेतराम गंगवार, श्री
चौधरी नौनिहाल सिंह, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा सिंह चौहान, श्री
छेदी, श्री (उर्फ छेदी लाल)
छोटे लाल, श्री
छोटे लाल 'निर्भय', श्री
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदम्बा प्रसाद सिंह, श्री
जगदीश, श्री
जगदीश प्रसाद, श्री
जगदीश प्रसाद त्रिवेदी, श्री
जगदीश सिंह, श्री
जगन्नाथ प्रसाद, श्री
जगन्नाथ सिंह, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जमुना प्रसाद, श्री
जयराम, श्री
जय शंकर पाण्डेय, श्री
जवाहर लाल, डाक्टर
जसवीर सिंह, श्री
जागन सिंह, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डाक्टर
जौहरी लाल त्रिवेदी, श्री
ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री
झामलाल अहेरवार, श्री
डी० पी० बोरा, श्री
तेज भान सिंह, श्री
तेजभान सिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रिवेनी सिंह, श्री
दयाराम भास्कर, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दिनेश चन्द्र रस्तोगी, श्री
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री
दीपनारायण, श्री
दुक्खी प्रसाद, श्री
दुर्ग विजय सिंह, श्री
देवकी नन्दन, श्री
देव कुमार, श्री
देव बहादर सिंह, श्री
देव राम, श्री
देवेन्द्र दत्त शास्त्री, श्री
धरम राम, श्री
धर्मगज सिंह, श्री
धर्मदत्त वैद्य, आचार्य
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धीरेन्द्र सहाय, श्री
नंगा राम, श्री
नत्थू सिंह, श्री
नन्दराम, श्री
नन्हें लाल कुरील, श्री
नरेन्द्र सिंह, श्री
नरेश चन्द्र, श्री
नरेशपाल सिंह यादव, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण सिंह, श्री
नारायण सिंह भैंसोरा, श्री
नेतराम सिंह, श्री
नेम सिंह चौहान, श्री
पद्माकर लाल श्रीवास्तव, श्री
पुरुषोत्तम कौशिक, श्री
पुरुषोत्तम दास, श्री
पुष्पा तलवार, श्रीमती
पूरन चन्द्र, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारे लाल, श्री
प्यारे लाल शाक्य, श्री
प्रतापसिंह, श्री

प्रतापसिंह पुष्पवान, श्री
प्रभू दयाल यादव, श्री (एडवोकेट)
प्रेम नारायण अहेरवार, श्री
प्रेमवती, श्रीमती
फजलुर्रहमान अन्सारी श्री
फजलुलबारी, श्री (उर्फ बन्ने भाई)
बंगाली सिंह, डाक्टर
बच्चा पाठक, श्री
बदनसिंह, श्री
बनारसी दास, श्री
बनारसी दास चाँदना, श्री
बरफिया लाल जुवाँठा 'अरबिन्द', श्री
बलदेव, श्री
बलबीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
बलबीर सिंह, श्री (जिला मैनपुरी)
बशीर अहमद, श्री
बसंत, श्री
बाँकेलाल, श्री
बाबू बदरे, श्री
बाबू राम प्रभाती, डाक्टर
बाबू राम वर्मा, श्री
बाबू राम शुक्ल, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू लाल विद्यार्थी, श्री
बाबू लाल 'सरोज', श्री
बाबू सिंह, श्री (जिला अलीगढ़)
बाबू सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
बाल कृष्ण, श्री
बिन्दू लाल, श्री
बिशुन दयाल, श्री
बिहारी लाल हन्स, श्री
बुद्धू राम, श्री
बृज बल्लभ सिंह, श्री
बृज लाल, श्री
बेचूराम, श्री
बेनी प्रसाद माधव, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
ब्रज बल्लभ, श्री
ब्रह्म दत्त द्विवेदी, श्री
भगवत दयाल, डाक्टर
भगवती चरण 'निर्मोही', श्री
भगवती प्रसाद सिंह, श्री
भगवानदीन कुशवाहा, श्री
भगवान सिंह, श्री
भगौती सिंह, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भीमा प्रसाद, श्री
भीषम, श्री
मंगल देव, श्री
मंगलराम प्रेमी, श्री
मकबूल अहमद, श्री
मथुरा प्रसाद पाण्डेय, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शन्नू खाँ)
मन्जूर अहमद, श्री
मन्नालाल, श्री
मन्नीलाल, श्री
मन्नूराम, श्री
मन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मलिक मोहम्मद कमाल यूसुफ, श्री
मलिखान सिंह, श्री
मसूदुल हसन नोमानी, श्री
महेन्द्र रिपुदमन सिंह, राजा
महेन्द्र सिंह यादव, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मानसिंह आजाद, श्री
माधव, श्री
मालती शर्मा, श्रीमती
मिठाई लाल, श्री
मित्रसेन, श्री
मुकन्दी सिंह, श्री
मुख्तार अनीस, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुनीन्द्रपाल सिंह, श्री
मुफ्ती जलील अहमद, श्री
मुलायमसिंह यादव, श्री
मुश्ताक अहमद, श्री
मुहम्मद खलील उल्लाह कुरैशी, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मूल चन्द्र, ठाकुर
मैनेजर सिंह, श्री
मोअज्जिज अली बेग, डाक्टर
मोतीराम, श्री
मोतीलाल देहलवी, श्री
मोहन लाल, श्री
मोहन लाल त्रिपाठी, श्री
मोहन सिंह, श्री (जिला देवरिया)
मोहन सिंह, श्री (जिला रायबरेली)

मोहम्मद उस्मान, श्री
मोहम्मद शमीम अन्सारी, श्री
मौजी लाल कुरील, श्री
यशपाल सिंह, श्री
रघुबर दयाल वर्मा, श्री
रणजीत सिंह, श्री
रणजीत सिंह 'जूदेव', श्री
रणवीर सिंह, श्री
रफी उल्लाह, श्री
रफीक अहमद खां, श्री
रमा शंकर कौशिक, श्री
रमेश चन्द्र, श्री
रवीन्द्रनाथ तिवारी, श्री
राघव राम मिश्र, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राज कुमार शर्मा, श्री
राज नारायन, श्री
राज नाथ सिंह, श्री
राजपति मिश्र, श्री
राजबली तिवारी, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राजमंगल तिवारी, श्री
राज मंगल पाण्डेय, श्री
राजेन्द्र चौधरी, श्री
राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राजेश कुमार सिंह, श्री
राधेश्याम शर्मा, श्री
राम अधार, श्री
राम अधार यादव, बाबा
राम आसरे, श्री
राम आसरे अग्निहोत्री, श्री
राम आसरे वर्मा, श्री
राम कृष्ण, श्री
राम गोबिन, श्री
राम चरन शाह, श्री
राम जनम, श्री
राम जनम राय, श्री
रामजी, श्री
रामदत्त जोशी, श्री
राम दयाल, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव दुबे, श्री
राम देव यादव, श्री
राम नरायन वर्मा, श्री
राम नरेश पाण्डेय, श्री
राम नरश यादव, श्री
रामपति, श्री
राम प्यारे, श्री
राम फेर कोरी, श्री
राम बक्श, श्री
राम बरन वर्मा, श्री
राम रतन सिंह, श्री
राम रति देबी, श्रीमती
राम लखन, श्री
राम शिरोमणि दुबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम सरन सिंह, कुंवर
राम सागर, श्री
राम सिंह, श्री
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री
राव मुश्ताक अहमद खां, श्री
रियासत हुसैन, श्री
रेवती रमण रस्तोगी, श्री
रेवती रमण सिंह, श्री (उर्फ मणि जी)
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्खी सिंह, श्री
लक्ष्मण सिंह, श्री
लक्ष्मी नरायन, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लाल दास, श्री
लीलवत सिंह, श्री
वंश गोपाल चतुर्वेदी, श्री
विक्रमा राय, श्री
विजय राज सिंह, श्री
विद्या शंकर, श्री
विमला राकश, श्रीमती
विश्वनाथ पाडेय, श्री
विष्णु प्रताप सिंह, श्री
वीरेन्द्र चतुर्वेदी, श्री
बीरेन्द्र पति यादव, श्री
शंकर सिंह, श्री
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शतरुद्ध प्रकाश, श्री
शफीकुर्रहमान बर्क, श्री
शमशाद अहमद, हाजी
शम्भूनाथ, श्री
शम्भूनाथ चौधरी, श्री
शशि प्रभा, श्रीमती

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शारदा देवी, श्रीमती
शारदा प्रसाद जायसवाल, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिव दास, श्री
शिव प्रसाद, श्री
शिवमंगलसिंह, श्री
शिवलाल मित्तल, श्री
शोबन सिंह जीना, श्री
श्याम दत्त पालीवाल, श्री
श्याम देव, श्री
श्याम नारायण तिवारी, श्री
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम सुन्दर गुप्त, श्री
श्रीचन्द्र, श्री
श्रीनारायण, श्री (उर्फ भुलई भाई)
श्रीराम द्विवेदी, श्री
संगम लाल, श्री
संग्राम सिंह, श्री
सत्यदेव त्रिपाठी, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्य प्रकाश मालवीय , श्री
सत्यवीर, कुंवर
सन्त बख्श रावत, श्री
सियाराम सागर, श्री
सुखदराज सिंह, श्री
सुदामा प्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दरलाल, श्री
सुन्दर लाल दीक्षित, श्री
सुमेर चन्द गोयल, श्री
सुरेन्द्र कुमार कालरा, श्री (उर्फ सिन्धू)
सुरेन्द्रपाल, श्री
सुल्तान सिंह, श्री
सुबेदार प्रसाद, श्री
सूरज प्रसाद, श्री
सूरवीरसिंह, श्री
सूर्यनाथ उपाध्याय, श्री
सूर्यमुखी शर्मा, श्रीमती
सोनपाल, श्री (उर्फ सोहन लाल पिपल)
सोहन वीर सिंह तोमर, श्री
सोहन लाल, श्री
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
हरगोविन्द सिंह, श्री
हरदेव सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरिकेवल प्रसाद, श्री
हरि चरन यादव, श्री (एडवोकेट)
हरिपाल सिंह शास्त्री, श्री
हरिश्चन्द्र, श्री (उर्फ हरीश जी)
हरि किशन श्रीवास्तव, श्री
हरी राम वर्मा, श्री
हरी राम शाक्य, श्री
हरी सिंह, श्री
हाकिम लाल, श्री
हामिद रजा खां, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम चन्द तिवारी, श्री
हुक्म सिंह परिहार, श्री

नोट--स्वायत्त शासन मन्त्री श्री रामाधार पांडेय तथा नियोजन राज्य मन्त्री श्री महिपाल सिंह शास्त्री भी सदन में उपस्थित थे ।

उत्तर प्रदेश सभा

भारत के प्रथम गवर्नर जनरल, लार्ड माउण्टबैटन के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सदन को शायद विदित होगा कि भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबैटन की दुःखान्त घटना हुई जिसकी वजह से शीत लहरी तमाम देश में फैल गयी। मैं आपसे अनुरोध करूंगा और मैं आशा करता हूं कि सदन के सभी पक्षों को मान्य होगा कि आज की कायवाही स्थगित की जाए और केवल आदरणीय माउण्टबैटन को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद सदन की कायवाही मुल्तवी कर दी जाए। यह मेरा अनुरोध है।

श्री देव बहादुर सिंह (जिला नैनीताल)—

प्रस्ताव अगर कोई हो तो, आप रख दें।

श्री नारायण दत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—

आप अपनी श्रद्धांजलि जारी रखें। वही तरीका है।

श्री उपाध्यक्ष—

सारा सदन सहमत है। किसी को कोई आपत्ति नहीं है।

श्री बनारसी दास—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लार्ड माउण्टबैटन आयरलैण्ड में ग्रीष्मावकाश पर थे और वे नौका में अपने परिवार के कुछ सदस्यों के साथ जा रहे थे, 5 मिनट बाद उसम विस्फोट हुआ और मालूम हुआ कि वहाँ की रिपब्लिकन पार्टी के एक विच्छिन्न अंग ने वहाँ पर यह तोड़-फोड़ की कार्यवाही की जिससे लार्ड माउण्टबैटन की मृत्यु हो गयी और उनके पौत्र की भी मृत्यु हो गयी। उनकी लड़की और दामाद गम्भीर अवस्था में हैं।

लार्ड माउण्टबैटन में शुरू से ही नेतृत्व के गुण थे। इंग्लैण्ड की परम्परा के अनुसार वे इंग्लैण्ड की 'नेवी' के चीफ रहे दूसरा महायुद्ध हुआ उसमें दक्षिण पूर्व एशिया के सुप्रीम कमाण्डर थे। उनके नेतृत्व म जापान का समर्पण हुआ। सन् 1945–46 के अन्त में जब इंगलैण्ड के अन्दर युद्ध समाप्त होने के बाद चुनाव हुआ, लेबर पार्टी बहुमत में आई और मिस्टर एटली प्रधान मन्त्री बने। लेबर पार्टी ने निश्चय किया था कि भारतवर्ष को स्वतंत्र किया जाए भारतवर्ष को पराधीन रखना संसार के अन्दर अशान्ति कायम रखना है। उस वक्त प्रश्न था, स्वतंत्रता की स्थापना के बाद एक ऐसे महान प्रशासक की जिसको न केवल लेबर पार्टी का विश्वास प्राप्त हो बल्कि अनुदार और कन्जरवेटिव पार्टी का भी विश्वास प्राप्त हो और जिसकी प्रतिष्ठा तमाम संसार में हो। इसलिए लार्ड माउण्टबैटन को इस एतिहासिक महत्वपूर्ण कार्य के लिए चुना गया और वे भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तिम वाइसराय बन कर आए तथा आते ही हिन्दुस्तान में यहाँ के मुख्य दलों से सत्ता को हस्तान्तरित करने का प्रयास शुरू किया। महात्मा गाँधी बिहार में थे, वहाँ से बुला कर महात्मा गाँधी से बात-चीत की। अन्य नेताओं से बात-चीत की। पहले इरादा था चुनाव सन् 1948 तक कराकर हस्तान्तरित की जाय। लेकिन कैबिनेट मिशन के आने के बाद हिन्दुस्तान में साम्प्रदायिक तनाव बढ़ गया। नोआखाली, बिहार, बंगाल, कलकत्ता, नार्थ वेस्ट फ्रन्टियर प्राविन्स, बलूचिस्तान, पूर्वी और पश्चिमी पंजाब की सभी जगहों पर साम्प्रदायिक दंगे हो गये। इन परिस्थितियों में लार्ड माउण्टबैटन ने निश्चय किया कि सत्ता हस्तान्तरित करना एक साल तक स्थगित करना देश हित में न होगा। इसलिए निश्चय किया कि 15 अगस्त, 1947 को देश के अन्दर सत्ता हस्तान्तरित कर दी जाये। लार्ड माउण्टबैटन ने बड़ी योग्यता और बुद्धिमत्ता से कार्य किया, उस समय जबकि भारत के विभाजन जैसी बहुत बड़ी दुःखद

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

घटना हुई। भारत के विभाजन का परिणाम हमारे देश को भुगतना पड़ा और पड़ रहा है, लेकिन वह तो ब्रिटिश सरकार की नीतियों को कार्यान्वित कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार की नीतियों को भी कार्यान्वित करने में उन्होंने इस बात का पूरा प्रयास किया कि हिन्दुस्तान के अन्दर पूर्ण शान्ति के साथ सत्ता हस्तान्तरित की जाए। यह भी अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि सन् 1857 से लेकर सन् 1947 तक ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ किसी न किसी रूप में संघर्ष चलता रहा है लेकिन उनके साथ सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे।

पाकिस्तान ने मुहम्मद अली जिन्ना को अपना प्रथम गवर्नर जनरल बनाया, लेकिन भारत में पण्डित जवाहर लाल नेहरू, और सरदार पटेल न महात्मा गाँधी के परामर्श से लार्ड माउण्टबैटन को प्रथम गवर्नर जनरल बनाने का निश्चय किया। लार्ड माउण्टबैटन ने गवर्नर बन कर बड़ी ही सत्य निष्ठा के साथ भारतवर्ष की सेवा की। हिन्दुस्तान की देशी रियासतों के एकीकरण और उनके विलय का श्रेय सरदार पटेल को है, लेकिन लार्ड माउण्टबैटन का योगदान भी देशी रियासतों को परामर्श देने में और उनको भारत में मिलाने में कम नहीं था। जोधपुर, जयपुर कई ऐसी रियासतें थीं जो संशय कर रही थीं, लेकिन लार्ड माउण्टबैटन ने उन्हें परामर्श दिया। हिन्दुस्तान के एकीकरण में और देशी रियासतों के विलय में उनके परामर्श से काफी मदद मिली। पार्टीशन के बाद जब दंगे हुए, नर हत्याएं हुई, खून की नदियां बही, उस वक्त लार्ड माउण्टबैटन ने स्वयं अपने यहाँ कन्ट्रोल रूम बनाया। नेहरू और सरदार पटेल को शान्ति स्थापित करने में पूरा साथ दिया। वह दिल्ली के अन्दर नहीं थे, बाहर थे, शिमला में, वह वापस आए, उन्होंने कमाण्डर की हैसियत से अपनी सेवाएं शान्ति स्थापित करने में दीं।

महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरू, लार्ड माउण्टबैटन का बड़ा आदर करते थे। जब 15 अगस्त, 1947 को आजादी मिली, यह भी एक ऐतिहासिक घटना थी, जो बागियों का झंडा कहलाता था उसको लाल किले पर फहराया गया। इस प्रकार एक नई करवट भारत के इतिहास ने ली। लार्ड माउण्टबैटन रिटायर हो गए, 26 जनवरी, सन् 1950 को, उसके बाद श्री राज गोपालाचारी गवर्नर जनरल बनाये गए, वह 26 जून, 1950 तक रहे। लार्ड माउण्टबैटन अवकाश ग्रहण करने के बाद पूर्ण रूपेण और स्थायीरूप स भारत के मित्र रहे। और यह लार्ड माउन्टबैटन का कार्य था कि ब्रिटिश कामनवेल्थ में हिन्दुस्तान ने रहना स्वीकार किया, एक बराबर के साझीदार की हैसियत से। उससे यहाँ की स्वतंत्रता पर किसी तरह का प्रभाव नहीं हुआ। यह एक मात्र कार्य अहिंसात्मक और शान्तिमय उपायों का था जिसमें महात्मा गाँधी यकीन करते थे कि असली विजय वह होती है जिसमें हृदय परिवर्तन होता है। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम का परिणाम हुआ कि ब्रिटिश शासकों का, ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का हृदय परिवर्तन हुआ और उस हृदय परिवर्तन के प्रतीक थे लार्ड माउन्टबैटन। जिस प्रकार से वह घटनाग्रस्त हुए, जिस प्रकार से आयरलैण्ड में वह एक हिंसा में शिकार हुए, यह और ज्यादा हम सबके लिए दुखदायी है। मैं लार्ड माउण्टबैटन के प्रति श्रद्धांजलि और उनके परिवार, ब्रिटिश शासन के प्रति और साम्राज्ञी के प्रति सम्वेदना व्यक्त करता हूं। श्रीमन्, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इस सदन की भावनाएं और समवेदनाएं, हमारी श्रद्धांजलि आप भारत सरकार द्वारा वहाँ की साम्राज्ञी और लार्ड माउण्टबैटन के परिवार तक पहुंचा दें।

*श्री नारायण दत्त तिवारी (नैनीताल)—

श्रीमन्, माननीय नेता सदन ने जो दुखपूर्ण समाचार इस सम्मानित सदन को आज लार्ड माउण्टबैटन की निर्मम हत्या के सम्बन्ध में प्रस्तुत किया और जो श्रद्धांजलि और संवेदना के शब्द यहाँ प्रयुक्त किये हैं, मैं अत्यन्त दुख के साथ अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं। हम लोग, इस सदन के माननीय सदस्य, जो भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री नारायण दत्त तिवारी]

प्रणेता रहे है उसमें यदि किंचित भागीदार रहे हैं, हमें इतिहास के वह पन्ने बरबस याद आते है जबकि वर्षों तक लार्ड माउण्टबैटन का राजनीतिज्ञ, प्रशासकीय, कूटनीतिज्ञ चेहरा भारत के इतिहास और अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास पर व्याप्त रहा। माननीय नेता सदन ने बड़े विस्तार के साथ उन विविध आख्यानों, अनेक राजनीतिक घटनाओं का उल्लेख किया है, जो लार्ड माउण्टबैटन के नेतृत्व में समय-समय पर भारत के आजादी के इतिहास में सम्पन्न हुईं।

श्रीमन्, लार्ड माउण्टबैटन का जीवन एक असाधारण जीवन था, चाहे वह युद्ध क्षेत्रमें रण नायक, सेनानायक के रूप में रहा हो, चाहे वह जल पोत का नेतृत्व करते हुए जलाधिपति के रूप में रहा हो, चाहे वह युद्ध म एक जनरल के रूप में रहा हो, उनका अद्भुत जीवन रहा है। ब्रिटेन की वर्तमान पीढ़ी में वह इस दृष्टिकोण से एक अद्भुत व्यक्ति माने जाते रहे है। हमें उनकी वह छबि याद आती ह जबकि विभाजन के दिनों में साम्प्रदायिकता की अग्नि दावाग्नि की तरह धू-धू करके जल रही थी। फिरकापरस्त शक्तियाँ हमारे इस महाद्वीप में नंगा ताण्डव नृत्य कर रही थीं और मानव के रक्त से खून की होली खेली जा रही थी। उस समय जिस प्रकार से लाड माउण्टबैटन ने साम्प्रदायिकता की भड़कती हुई अग्नि को शान्त करने में जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद का उन्होंने साथ दिया और अद्भुत धैर्य और कुशलता दिखाई, वह हमारे इतिहास में चिरस्मणीय रहेगी। वह भारत के सच्चे मित्र थे और उन्होंने रिटायर होने के बाद भी इस बात की निरन्तर चेष्टा की कि चाहे विश्व बैंक हो, चाहे यूनाइटेड नेशन्स हो, चाहे ब्रिटिश कामनवेल्थ के विभिन्न कोष हों, चाहे भारत की विभिन्न जो योजनाएं हैं उनको बिना शर्त सहायता देना हो, इसका उन्होंने निरन्तर प्रयास किया ह कि वह मिलें। जो कूटनीतिक और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत को उलझना पड़ा था, उसमें भी एक कूटनीतिज्ञ के रूप में, राजनीतिज्ञ के रूप में वह समय-समय पर कार्य करते रहे और आज भी उनक वरिष्ठ नेतृत्व का भारत को विश्वास था। अभी प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति ने उल्लेख किया था कि किस प्रकार लार्ड माउण्टबैटन की यात्रा भारत में होने वाली थी जिसकी भारत प्रतीक्षा कर रहा था। तो आज जिस प्रकार वह एक हिंसक घटना के शिकार हुए है उसमें हमें दुख होता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इस प्रकार की हिंसाओं से राजनीतिक नेताओं को उठाया जा रहा है, हमारे बीच से, यह चिन्ता का विषय है। तो श्रीमन्, मैं भी ऐसे महान व्यक्ति के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं अपने दल की ओर से तथा विरोधी दल की ओर से। मुझे विश्वास है कि श्रीमन्, आप कृपा पूर्वक हम सबकी श्रद्धांजलि के शब्द उनके शोक संतप्त परिवार तक और जो ब्रिटिश शासन के व्यक्ति हैं उन तक पहुंचाने का कष्ट करेंगे।

*श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

मान्यवर, लार्ड माउण्टबैटन के सम्बन्ध में जो भाव माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल ने व्यक्त किए है उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं क्योंकि सब बातें कही जा चुकी है। मान्यवर, लार्ड माउण्टबैटन की मृत्यु जिस प्रकार से हुई है उसकी घोर निन्दा मैं समझता हूं, सारे जगत में की जा रही है और मैं भी उसका निन्दा करता हूं। इस प्रकार की घटनाएं चाहे जहाँ हों वह निन्दनीय है और घृणित है। श्रीमन्, लार्ड माउण्टबैटन हिन्दुस्तान के दोस्तों में से थे, वह कुशल प्रशासक थे, वह कूटनीतिज्ञ और राजनीतिक व्यक्ति भी थे जो दुर्घटना के शिकार हुए और साथ ही उनके परिवार के लोग भी दुर्घटना-ग्रस्त है तथा घायल हुए ऐसा समाचार है। इस लिए श्रीमन्, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी तरफ से और दल की तरफ से उनके शोक सन्तप्त परिवार को हमारी शोक समवेदना भेजने की कृपा करें और ब्रिटिश शासन के जो अधिकारी यहाँ हैं उन तक हमारी श्रद्धांजलि पहुंचा दें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री लक्ष्मीशंकर यादव (जिला जौनपुर)—

श्रीमन्, नेता सदन, नेता विरोधी दल और ऊदल जी ने लार्ड माउन्टबैटन के निधन के सम्बन्ध में जो भाव व्यक्त किए हैं उससे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। नेता सदन तथा अन्य नेताओं ने उनके जीवन के विषय में विस्तार से बताया है उनमें बड़ी खूबियाँ थीं, वह एक कुशल राजनीतिज्ञ थे, वह एक बहादुर सेना नायक भी थे। सबसे बड़ी खूबी यह थी कि 15 अगस्त, 1947 तक जो भारत के शासक रहे, उसके बाद भारत के वह प्रथम गवर्नर जनरल के रूप में भारत के मित्र बने और यही नहीं जैसा कि उस समय अशान्ति थी सरकार परस्ती में वह किस प्रकार सहायक हुए जिसका प्रधान मन्त्री और अन्य मंत्रियों ने जिक्र किया है लेकिन महात्मा गाँधी के उससे भी बढ़ कर जैसा कि नेता सदन ने बताया कि रियासतों के विलीनीकरण में उनका सहयोग मुख्य था। किन्तु लार्ड माउण्टबैटन का उसमें हाथ कम न था। वह पूरी तरह से उसमें सहायक थे। यही कारण था कि रियासतों के विलीनीकरण में बड़ी आसानी से सहायता मिल सकी और आज तक वह भारत के शुभचिन्तक रहे। ऐसे व्यक्तित्व के चले जाने के बाद स्वाभाविक है कि सारे देश भर में शोक फैलेगा और सभी दुखी होंगे। हम, मान्यवर, आपसे निवेदन करते हैं कि हमारी तरफ से तथा हमारे दल की तरफ से शोक सन्तप्त परिवार को श्रद्धांजलि भेजने की कृपा करें।

*श्री राम आसरे वर्मा (जिला हरदोई)—

मान्यवर, लार्ड माउन्टबैटन की दुखद हत्या के सम्बन्ध में जो उद्गार माननीय नेता सदन तथा माननीय नेता विरोधी दल, माननीय ऊदल जी और माननीय यादव जी ने प्रकट किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, लार्ड माउण्टबैटन ने दूसरे महायुद्ध में जो भूमिका अदा की, उस भूमिका ने, उनका विश्व के इतिहास में स्थान बना दिया और भारतीय इतिहास में तो चिरस्मर्णीय स्थान बन गया और उन्होंने आजादी के बाद भारत के उत्थान के लिए एक कड़ी के रूप में गवर्नर जनरल के रूप में काम किया। ऐसे व्यक्ति के बारे में मान्यवर, श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं आग्रह करता हूं कि हमारी तरफ से और हमारे दल की तरफ से, उनके शोक संतप्त परिवार को समवेदना के दो शब्द भेजने की कृपा करें।

*श्री रियासत हुसैन (जिला मुरादाबाद)—

श्रीमन्, आज माननीय नेता सदन नेजो सदन को सूचना दी, लार्ड माउण्टबैटन की दुखद हत्या के बारे में, उससे सारे सदन में एक शोक का वातावरण छा गया। इस सम्बन्ध म माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल ने तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं, उससे मैं अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

श्रीमन्, जंग के जमाने में लड़ाई चल रही थी और आजादी की जंग हो रही थी, उस समय दुनिया के बड़े-बड़े जनरल्स नें जो काम किया था उसमें नेवी का नेतृत्व लार्ड माउण्टबैटन के हाथ में था। उस समय मैंखुद एक सैनिक की हैसियत से ऐयर फोर्स में था। उस समय जनरल्स के बार में जो चर्चा होती थी, उसमें लार्ड माउण्टबैटन की काफी सराहना होती थी। श्रीमन्, आजादी की लड़ाई के बाद लार्ड माउण्टबैटन को हिन्दुतान के गवर्नर जनरल के रूप में कार्य करते हुए हिन्दुस्तान में रहने का मौका मिला। आजादी के बाद जो वातावरण फैला था, जगह-जगह दंगे हो रहे थे। एक तरफ उन्होंने विशेष रूप से कन्ट्रोल करने का प्रयास किया और दूसरी तरफ मुल्क को कामन वेल्थ का मेम्बर बनाने के लिए ताकि दुनिया में उनके साथ मैत्री आगे भी कायम रहे, उसमें भी उन्होंने विशेष योगदान किया। यह उन्हीं का प्रयास है कि हिन्दुस्तान कामन वेल्थ का मेम्बर है।

श्रीमन्, आपसे अनुरोध है कि मेरी और मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि उनके शोक सन्तप्त परिवार को भेजवाने की कृपा करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री भगवती प्रसाद सिंह (जिला फैजाबाद)—

मान्यवर, जिस तरह से लार्ड माउण्टबैटन की हत्या हुई है, उसके लिए मुझको और मेरी पार्टी को अपार खेद है और मैं अपनी तरफ से तथा अपने दल की तरफ से उनके लिए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। माननीय नेता सदन ने उनके प्रति काफी कुछ कह ही दिया है। लार्ड माउण्टबैटन दुनिया के एक प्रमुख व्यक्ति थे, आजादी मिलने के बाद वह हमारे देश के गवर्नर जनरल हुए। जिस तरह से दुनिया में ऐसी हत्याएं होती है, इस तरह की घटनाएं नहीं होनी चाहिए। मैं इन शब्दों के साथ कहूंगा कि मेरी और मेरे दल की तरफ से संवेदना सन्देश उनके परिवार को भेज दिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय श्री ऊदल, श्री लक्ष्मी शंकर यादव, श्री रियासत हुसैन और श्री भगवती प्रसाद सिंह ने माननीय लार्ड माउण्टबैटन के निधन पर जो भावनाएं यहाँ व्यक्त की है, मैं अपने को और सारे सदन को उनसे सम्बद्ध करता हूं। लार्ड माउण्टबैटन स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले और पश्चात् भी भारत के मित्र माने जाते थे और आज तक माने जाते रहे हैं। उनका जन्म जगमोर हाउस विंडसर में 25 जून, 1900 में हुआ था। उन्होंने रायल नेवल कालेज, ओसबर्न तथा डार्माउथ में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पायी। उनका विवाह 1922 में कु0 ऐडवन ऐले के साथ हुआ था। 1913 में सर्व प्रथम 13 वर्ष की आयु में उन्होंने नेवेल कैडेट के पद पर कार्य किया और 1946 तक इंगलैण्ड में सेना में विभिन्न पदों पर रहे और बहुत ही अच्छी तरह से अपना कर्त्तव्य निभाया। 1947 में वे आजाद भारत के प्रथम गवर्नर जनरल नियुक्त किए गए और उसके बाद जून, 1948 तक यहाँ के गवर्नर जनरल रहे। उन्होंने भारत देश में जब विभिन्न रियासतों का विलय हो रहा था उस समय विशेष सहायता तत्कालीन गृह मन्त्री सरदार पटेल को दी। देश की और जो समस्याएं थीं, उनको सुलझाने में उन्होंने प्रधान मंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू की भी मदद की, इसलिए उनका नाम सदैव यहाँ के इतिहास में अमर रहेगा। माननीय नेता सदन और विभिन्न नेताओं ने जो यहाँ पर शोकोद्गार व्यक्त किए है, मैं सदन की तरफ से और अपनी तरफ से वहां की महारानी और वहाँ की प्रधान मंत्री श्रीमती थैचर और वहां की पार्लियामेंट के स्पीकर को उनसे अवगत करा दूंगा। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए हम दो मिनट के लिए खड़े होकर सम्मान व्यक्त करें।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट मौन खड़े हुए।)

श्री उपाध्यक्ष—

जैसा माननीय नेता सदन ने पहले ही कह दिया था, आज सदन अपने कार्य को स्थगित करेगा और कल 11 बजे हम फिर बैठेंगे। आज विधान सभा सचिवालय भी बन्द रहेगा।

(इसके बाद सदन 11 बजकर 31 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

लखनऊ:
28 अगस्त, 1979

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

पी0 एस0 यू0 पी0—एल 328 विधान सभा (571)—1980—835।